(ग) सच्चा ज्ञानी वही है जिसे आत्मज्ञान है और जो परमात्मा को जानने वाला है तथा जो भेदभाव से ऊपर है।

18/6/21 IX Class क्षितिज पाठ-10 ललद्यद पृ० 90

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न—1. 'रस्सी' शब्द यहाँ किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और वह कैसी है?

उत्तर—'रस्सी' शब्द यहाँ साँसों अथवा प्राणों के लिए प्रयुक्त हुआ है। यह रस्सी कच्चे धागे की बनी हुई, अत्यंत कमज़ोर और नाशवान है। यह रस्सी जीवन रूपी नौका को संसार रूपी सागर में खींच रही है।

प्रश्न—2. कवयित्री द्वारा मुक्ति के लिए किए जाने वाले प्रयास व्यर्थ क्यों हो रहे हैं?

उत्तर—कवयित्री द्वारा मुक्ति के लिए किए जाने वाले प्रयास इसलिए व्यर्थ हो रहे हैं क्योंकि उसके प्रयास स्वाभाविक रूप से कमज़ोर हैं। उसके प्रयास मिट्टी के कच्चे सकोरे के समान हैं जो पानी गिरते ही नष्ट हो जाते हैं।

प्रश्न—3. कवयित्री का 'घर जाने की चाह' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर—कवयित्री का 'घर जाने की चाह' से तात्पर्य है—मुक्ति की इच्छा। सभी जीव (आत्मा) परमात्मा के अंश

Scanned by TapScanner

हैं। उसी परमात्मा से उत्पन्न हुए हैं। जन्म के साथ ही वे अपने घर से अलग हो गए हैं। इसीलिए परमात्मा का घर ही उसका वास्तविक घर है। उसे पाने की इच्छा ही घर जाने की चाह है।

प्रश्न—4. भाव स्पष्ट कीजिए—

(क) जेब टटोली, कौड़ी न पाई।

उत्तर—हठयोग की साधना से लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती। इस साधना से मुक्ति प्राप्त नहीं होती क्योंकि साधक इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ी के चक्कर में ही भटकता रह जाता है। इसके बाद जब वह आत्मालोचन करता है तो उसे लगता है कि उसे कुछ प्राप्त नहीं हुआ। वह जैसा था वैसा ही रह गया।

(ख) खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं,
न खाकर बनेगा अहंकारी।

उत्तर—खा-खाकर मनुष्य केवल शरीर और इंद्रियों का भरण-पोषण करता है, अत: उससे कुछ भी प्राप्त नहीं होता। मनुष्य भोजन द्वारा इंद्रियों की विषय-वासनाओं की पूर्ति करता है, उपभोग में लगा रहता है। उसकी तृप्ति नहीं होती अपितु तृष्णा और बढ़ जाती है। उससे उसे ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती। 'न खाकर' वह अपनी इंद्रियों पर तो नियंत्रण कर लेता है किंतु ऐसी साधना से उसके अंदर अहंकार उत्पन्न हो जाता है। व्रत-उपवास रखकर ही वह अपने आप को ईश्वर-भक्त समझने लगता है। व्रत-उपवास धर्म के बाह्य आचरण हैं, वास्तविक धर्म नहीं। अहंकार आने पर ईश्वर की प्राप्ति संभव नहीं है।

प्रश्न—5. बंद द्वार की साँकल खोलने के लिए ललद्यद ने क्या उपाय सुझाया है ?

उत्तर—बंद द्वार की साँकल खोलने के लिए ललद्यद ने समानता की भावना अपनाने का उपाय सुझाया है। साधक जब अंत:करण तथा बाह्य-इंद्रियों पर नियंत्रण कर समभाव अपना लेगा, तभी उसकी चेतना व्यापक होगी और उसका मन मुक्त होगा।

प्रश्न—6. ईश्वर प्राप्ति के लिए बहुत से साधक हठयोग जैसी कठिन साधना भी करते हैं, लेकिन उससे भी लक्ष्य प्राप्ति नहीं होती। यह भाव किन पंक्तियों में हुआ है ?

उत्तर—आई सीधी राह से, गई न सीधी राह।
सुषुम-सेतु पर खड़ी थी, बीत गया दिन आह!
जेब टटोली, कौड़ी न पाई।
माँझी को दूँ, क्या उतराई ?

प्रश्न—7. 'ज्ञानी' से कवयित्री का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—'ज्ञानी' से कवयित्री का तात्पर्य है हिंदू-मुसलमान तथा ईश्वर में भेदभाव न मानने वाला और अपने आप को पहचानने वाला साधक।

रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न—8. हमारे संतों, भक्तों और महापुरुषों ने बार-बार चेताया है कि मनुष्यों में परस्पर किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होता, लेकिन आज भी हमारे समाज में भेदभाव दिखाई देता है।

(क) आपकी दृष्टि में इस कारण देश और समाज को क्या हानि हो रही है ?

उत्तर—भेदभाव के कारण देश और समाज टुकड़ों में बँटा है। देश और समाज में विभिन्न संप्रदायों, जातियों और वर्गों के बीच दूरियाँ बढ़ रही हैं जो राष्ट्रीय एकता को कमज़ोर कर रही हैं। लोगों में एक-दूसरे के प्रति स्नेह, सहानुभूति, दया, ममता और सद्भाव जैसी मानवीय भावनाएँ कम हो रही हैं। लोग स्वार्थी हो रहे हैं। सांप्रदायिक दंगे होते हैं। जिससे

Scanned by TapScanner

देश और समाज की प्रगति प्रभावित होती है। देश के सीमित संसाधनों का इन दंगों को दबाने में अपव्यय हो रहा है। हम आर्थिक दृष्टि से कमज़ोर हो रहे हैं। अलगाववाद की भावना ज़ोर पकड़ती है। आतंकवाद, संप्रदायवाद, जातिवाद, भाषावाद, प्रांतवाद आदि समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। देश की कानून-व्यवस्था चरमरा रही है। सामाजिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। नैतिकता, कर्तव्य, ईमानदारी आदि आदर्श पीछे छूट रहे हैं। विश्व में हमारी प्रतिष्ठा कम हो रही है।

(ख) आपसी भेदभाव को मिटाने के लिए अपने सुझाव दीजिए।

उत्तर—विभिन्न संप्रदायों, जातियों, वर्गों के आपसी भेदभाव मिटाने के लिए आवश्यक है कि उनके मध्य स्नेह, सहानुभूति, दया, ममता और सद्भाव की स्थापना के लिए शिक्षा का प्रचार-प्रसार किया जाए। बिना किसी भेदभाव के सभी को योग्यता के आधार पर समान अवसर दिए जाएँ। सभी संप्रदायों को परस्पर एक-दूसरे से घुलने-मिलने का अवसर दिया जाए। घृणा, द्वेष फैलाने वाले धार्मिक नेताओं को कठोर दंड दिया जाए। जिस शहर, गाँव, नगर में सांप्रदायिक दंगा हो उस पर सामूहिक जुर्माना किया जाए। अंतर्जातीय विवाह संबंधों को बढ़ावा दिया जाए। देश की एकता को हानि पहुँचाने वाले स्वार्थी नेताओं को सख्त से सख्त दंड दिया जाए। इसके लिए प्रचार-प्रसार के साधनों का खुलकर प्रयोग किया जाए।

Scanned by TapScanner